

~~३३६~~

२३२

३३६

२३२ २५५: पूर्ण
ASHA ARCHIVES

भारत सावित्री मंदिर: स्तोत्र

यारि दुभोचन शङ्कर स्तोत्र

दश गुण विरोध स्तोत्र निष्काल निरुद्ध
स्तोत्र

नमस्तगवते वासुदेवाय ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥
 ब्रूहि सः श्रययद्दुर्लभं यद्वै ते वीमलात्मना ॥ पाठ
 वानीकचक्रम् ॥ संयत्तं मे मया हव ॥ कर्तुं तु यमस्य
 याथा ॥ कर्तुं तु महाबला ॥ महा नथा ॥ श्रुत्वा कर्तुं तु
 कथं न विनियोगिता ॥ राक्षसा लोके कथं न ॥ कु
 र्वन्त्यलोके कथं न ॥ युगं तु मम मन्दात्मा ॥ कथं इया
 धना हनः ॥ सः श्रययद्दुर्लभं यद्वै ते वीमलात्मना ॥ स

प्रययामवच ॥ ८८ ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ यथायुः प्रव
 र्त्तते ॥ अर्जुनः सायकि ॥ श्वेता धृष्टद्युम्नाय गच्छ ॥ कच
 शनकुलः सरुद्वयः ॥ धर्मयुगाय धिक्त्तिनः ॥ राम
 मना विना ॥ ८९ ॥ यद्वयमस्य नथा ॥ धृष्टकेतुः ॥ शि
 खण्डी च ॥ काशिनः ॥ अवीर्यवान् ॥ सोरडाडो यदया
 ध्य ॥ ९० ॥ अरिमन् ॥ मूर्खः ॥ वलः ॥ नाजतया ॥ सुसगाना ॥
 या ॥ ९१ ॥ मम सानथा ॥ या लुवानामिहा ॥ सर्ववि

सुयनाकुमाः कोलवानामिहयाक्षाः सर्वगनाकुविक्रमाः
डोलाडानिः कृयः कः कृषसना यलमृगः । तः
विष्टवाश्ववाह्लीकाः रगदहसु (थेवच) गकुनिः सो
वनालीकाः कृयवर्माजयडथः उत्तरकः सोमदहस्य
गमि विन्दुश्च यार्थिवः । वैकर्तना विकर्तुश्च कलिः
कृषक (थेवच) इर्दनश्च इनाथश्च इर्जयः सिंहकमयी
इः यदा इर्मलश्च इर्ध्वा इर्त्रिनीककः । इः गमगमा

पचित्रश्च जाडा इर्थधनः पुर्तुः । वने द्वात्रिंशत्तथा द्वा
ः ताननयपिकीरिताः । इथाधनुस हायार्थः थादुका
माः समागताः । आदियवसरायवः यवो नश्च कर्मवच
विनाठयव विर्जयः कर्तुर्थः रजनवर्षरः । उद्गागं यः
मयवः लीकायव मरः यवः । सकमडाग यवार्थः कर्तु
यवार्थमयवः । नवमगल्ययवार्थः ससौ किकमरः य
वः । मुर्वेकादगंथाकः द्वादगं गानियवार्थः । यथादग

ॐ २
 महायव आनुष्मस निकं पुन ॥ शुभं मधिक यवो कं
 चंदं मम गृह यन ॥ आशु मा वा स यवो रु गं पक्ष दं गुरु
 धौ उ गं मो वलं यव महायु सानिकं पुन ॥ धर्म नां
 मालानी ॥ यालु दृगस्य धी मरु ॥ रुय मसा दगं यव
 सगं पाहि निकं गुरु ॥ उन विगति यवो कं रु मि वं गं
 महादु रं ॥ अगनि मरु यवो नि यासन कथितानि वै ॥ रु
 मरु यथ ममास गृया दगं गित ति ॥ यव रु रं गन रं

युद्धं न कुरु यमदेवं ॥ अर्जुना दूतयात्री स्यात् दावाः
थालघूरुसुकः कः कुरुदुरयुदाजीव विरियुद्धं ता
एकी ॥ न कुरु गुरुलवः लः सधमिदगकाः गजाः पु
द्विकमनकायानि प्रागयनिसरुसधः ॥ १५ ॥ न वव
साथनः पात्रितनवलनवः तीमसनसमानासि सन
थात्ररथात्रयि ॥ नथनः धनयाहना ल्क ऊर्लकऊ
लनवः नथरुः समनयागा साकादवधनन्दनः ॥

जघानकोचवीसना लीमनामिगतजसा गथमाहाह
व्ययवइधनेवय कानुलनरुतालीषा कृष्णव्या
महात्मना नवम्यावृषसैनध ॥ निविद ॥ कृयसुथ
नसिदिनवसोरडा विनाठाइयदाहृग ॥ युवमा
नुमहाधाय डालावाथीलधामता जगिन ॥ यलितव्य
होववस्यालीगियइचानलयविष्यगडा ॥ लहृः
योउठाववव ॥ दगम्यारगदहावि निरुकाथजय

इथ ॥ इविश्रवाग्यवालीका सामदहृयलवक ॥ न
कादग्यादिनाकच हर्मावीजाघठाकव ॥ कृष्णक
नउमहानाजन ॥ कृष्णवासवदहया दादग्यावेवम
आकृ डालावाथीलहृग ॥ इ ॥ गसनमुयादग्या
विचिथायिजलहृग ॥ चउदग्याउसग्या हृगक
लमहावल ॥ वासुदेवसरुथेन जलगमलुवध
वृना ॥ नि ॥ गदहृयाहृयहृवीया ॥ युगनदद्याः

४६७ नाष्टसना ॥ न (अ) र ७ सूर्य सुत नही ना वृद्ध
हाना मिचंद्रहीना ॥ मुख्य यज्ञ चन्द्र सो रा यूर विन
यना क हा गथा विकी नवीसनाः कर्तु हीनाः न (अ) र ७
॥ गति निम महायुद्ध मादिथ च विल सिन ॥ अमावासी
ह ७ ४ मत्या नृपा वै कर्तु नायि च ॥ गता दिना वसानाः
च ना जाइ था धना ह ७ ४ गदायुद्ध महा नाज न हीम

सुनन वातिंत ॥ न वंद्यार्थान्नक्ष नष्टाः सर्ववको न
वा ॥ या उवाचानां महालक्ष्मी ॥ रत्ना हविर्जया रवेरु ॥ दिना
निदमराश्यास्य डालस्याहानि यक्षव दिनदयने कर्तुस्य
गत्वस्याडुदिनंगथा ॥ दिवसाडुगदायुद्धं ब्रूहं यनमदा
पूर्ण ॥ नवः रुद्रानगृडाद्या नवदुष्टविश्वविकाः ॥
आख्यातुचनमक्रामि ॥ दिगहं हननं वर ॥ तस्मिन्नेन
लयागो ॥ डालिनासो किंकारुतः ॥ धृष्टयुमाहगसुतः

निरवलीवमहावलः ॥ डोयदयाश्रयाक्षुला ॥ नृनसर्वनि
यातिगाः ॥ धृगनाबुडवाच ॥ कथंइथोधेनाजाजा ॥ तीमसे
ननयातिगः ॥ अक्षाहिलीदमेकावममपुत्रस्यवाहिली ॥ हा
विंजति सरुप्रत्या ॥ दुथानांरुलि नामयि ॥ नकमकंयदा
नीनां सरुप्रालियुनर्नवान् ॥ सषडिकसरुप्रस्यातुलंगमः
नां समासगः ॥ नृनवाक्षाहिलीसुका ॥ सेववेकादशांरवत
॥ सजयडवाच ॥ वारुल ॥ वृचय ॥ शुनाः मुषः ॥ मषः ॥ तयसि

वृ ॥ वृकादिवरुलवक् ॥ भारुजाडाः यगनिते ॥ वारुल ॥
थावितागभवः ॥ गजवाजीयदातयः ॥ यडायेतनृया ॥ ४४
नाः ॥ यडुकालेनिर्पक ॥ म ॥ सुप्रसूयानि सवनि ॥ नसव
निचगदिली ॥ नसुमनिरुहदुया ॥ नसुमनिरुजसुना
॥ इधर्मनदिनाडु ॥ यजसुविनियातिगाः ॥ वृगीहमनरव
यड ॥ रुमियानां महात्मनां वेदी कृताकुरुके ॥ युयंकृता
जनादन ॥ इथोधनयगुं कृता ॥ शुतिमनेवकादन ॥ नक

लंयरुसंक्ता न सहदवाह गगन । सागम ईन हताः
यजमानाय विस्तिनः ॥ गगलव ॥ शुर्वकृता ॥ रुयमानेव
जाजसु ॥ जयाहि कमि वदव्य महमेका विवर्जितः ॥ सर्व
कृतिमयकृत् कृत् कृत् महाकय । नलयरु वृया ॥ वृ
दीहि नायय विस्तिनः ॥ आरथातु चमहायुडु विवर्जित
न गच्छतः सुकृत् नमया रथागं भगहा नरसु च ॥ १०
मीरा नरसा विजिं घात रुहाययः प १० ॥ दिवावायः

दिवावाओ समवृदिसमवृव । गगमजनयदुवा ॥ १०
यजकृत् वि विवा ॥ नरय विद्यते गगल काय सिद्धिच
जायते ॥ यः मां अवयदियुः ॥ अडु कालसदाय १० ॥
॥ विगनरु स्रेयुय कि दगव वोलियवव । अहा नाउ क
नं याय ॥ ययमान विन गति । संवत्सन कृत् याय ॥ ययमा
न विन गति ॥ १० ॥ मीरा नरसा विजिं नित्य गृ ॥ १० ॥ दिवाय
१० ॥ सनया सिं ॥ १० ॥ ससाय ॥ सर्व याय ॥ १० ॥ यय ॥ १० ॥

को जाविनन्दो ॥ जागृत्स्वप्नसुखं ॥ सत्त्वनजगमस्य
 ॥ सर्वभगवत्पूजनीय ॥ उक्तावापिसिवाय ॥ निगिवदगि
 रुनि ॥ नास्तिदवद्विगीय ॥ १ ॥ सीगउत्तचसी ॥
 रययुमयुन ॥ दृष्ट्यायविकान ॥ द्विस्यनाग
 विनाग्य ॥ कृगकृगचगु ॥ कलद्वयविकान ॥ स
 खइखात्वमका ॥ सुनिगमनस्य ॥ सर्वशुद्धविषाद ॥
 उक्तावापिसिवाय ॥ निगिवदगिरुनी ॥ नास्तिदवद्वि

× गीय ॥ ४ ॥ दवद्वयमनिर्दु ॥ गुरुगणलिषय ॥ स
 द्विगन्धवयक ॥ याग्यराग्यवियाग ॥ ययुनिगगु
 निग ॥ वात्यवृद्धगयस्व ॥ वाद्यमस्तुयना ॥ वधिज
 नय ० न ॥ आयरनकमिमस्थ ॥ उक्तावापिसिवाय ॥ नि
 गिवदगिरुनि ॥ नास्तिदवद्विगीय ॥ ५ ॥ ॥ रूग्म
 नयुर्वि ॥ यरुवगिचमन ॥ नास्तिद्वयचकाय ॥ व
 जाविस्तु ॥ रू ॥ अकलकलमय ॥ विष्वद्वयजुगा

न शयलुमकुतु ०० नु ॥ स्यसद्वग रिगजन ॥ सर्व वि
भोग निरु ॥ उकावायि सिवाय ॥ मिनिवद निरु नि ॥ ना
सिदवदिगीय ॥ ४ ॥ गी ॥ र्थवृगय ॥ जयनय नि
यन्य ॥ स्नानदान विधन ॥ कर्णकुम्भकुगान्क ॥ वद
मनविमन ॥ धनिकलवृयाय ॥ किमकीठयन ॥ ग
सुपमुत्सुकुन ॥ अकनात्मनिनात्म ॥ उकावायि
सिवाय ॥ मिनिवद निरु नि ॥ नासिदवदिगीय ॥

॥ १ ॥ सुलसुसमान्य ॥ चविगद्वधमन ॥ यागय
कौउसिद्ध ॥ सुकमत्ययकाय ॥ बुढसु निवन ॥ ७ ॥ सो
धिरुदविचन ॥ धुरुकुम्भरिचान ॥ उरुसिन ॥ वि
मन ॥ इति कवीगना ॥ ८ ॥ उकावायि सिवाय ॥ मि
निवद निरु नि ॥ नासिदवदिगीय ॥ ९ ॥ नत्नय
कुसुनिक ॥ मृदुमयकविन ॥ वज्रसालजसान ॥ धुरु
दाक ॥ १० ॥ सुसित वि विमय ॥ कौसुरुवापिजा

न ॥ या ग्य वा ॥ ध सु सा सु ॥ अरि न रि न जन ॥ उ गु त
जा विमान ॥ उ का वा यि सि वाय ॥ मि मि व द रि रु नि ॥
ना स्मि द व द्वि तीय ॥ ६ ॥ धा गा धा न वि धा न ॥ जय ज
जय न न्य ॥ सा व रा व वि रा व ॥ नाम नाम रि चामि ॥
अ मृ ता वि नाय द ॥ नृ व रू व रू व ॥ स्व र्ग नि क अ न क ॥
अ रि न रि न म य ॥ व न च न पु च न ॥ उ का वा यि सि
वाय ॥ मि मि व द रि रु नि ॥ ना स्मि द व द्वि तीय ॥ १० ॥

सा गु य स्य य ॥ ० नि त्य ॥ म नी ध र्मा थ का म द ॥ वि घा रा म
यु व ॥ वि ज न्य ध ना जा य जा रु द ॥ सो क मा क स
अ मान ॥ स धा गी य य ॥ ० ॥ सि र्वा स न य स क वा ॥
वा क्त न क रि य व स्य स ज न वा ॥ का णि ती थ रू र्त्त न रा ॥
०० दं सा सु य ॥ ० ध सु व क्त रु धा वि पा रु गु ॥ ०० नि न
लि क ध न न न वि न वि न वि न ॥ नि र्वा न नि न न न
सा र्वा स मा य ॥ ॥ ००३ ॥ गुरु म सु ॥ ज था दृ ष्ट ग थ वि धि

ॐ नमो शिवाय ॥ जयद्वरवर्धन ॥ रुधमकलध्वज ॥ यु
नमधनयुमथधिय ॥ दवदवशिजगन्नाथ ॥ शिष्ट कि
नाथशिष्ट ॥ नमस्त्यनमस्त्यनमानमस्त ॥ १ ॥ ज
यष्टाशिष्ट ॥ सनायगमधनसर्वगगण ॥ सर्व
मरुष्टासर्वोलीस ॥ सर्वजगदीष्टानीलकण्ठ ॥ रु
नमानमस्त ॥ २ ॥ जयगजामयनिरुयम ॥ निरु
यमरादवकेलासनिवास ॥ केलासप्रियकचल

सिं ॥ यष्टवदनयनमष्टनमानमस्त ॥ ३ ॥ ज
ययुगनायकमरुलदायक ॥ मरुल्लेष्टचतुनानन
लकालकप्रियकविनाष्टन ॥ विश्वनाथविष्ट
नमानमस्त ॥ ४ ॥ जयनजनिप्रियनविष्टाशिला
वन ॥ स्नाकनाथगिनिजष्ट ॥ गिनीसगिनिनाजष्ट
सनन ॥ यदष्टकचष्टाष्टनमानमस्त ॥ ५ ॥
जयसूदनजटसरव ॥ महानटमरुकालकाली ॥

हृदयं हृदयानन्द निवीरु ॥ निवनन नन्दिक ॥ व
न्दी भानमानमस्तु ॥ ४ ॥ जयनिर्जन नजगद्युयम
लुन ॥ जगद्वयजगद्वयचन्द्राणी ॥ चवी चव्या
नीरु ॥ ललरु ॥ शिव शिव दनमानमस्तु ॥ ५ ॥ ज
यनियचयचवच नागमचन ॥ वामदवरायवर्धन ॥
निर्य निर्या नन्द निवन ॥ निर्गुल निर्वाण नीलवध
नमानमस्तु ॥ ६ ॥ जयजय शक्ति चजगदरायकच

× श्री सायन व ×

॥ गनउगचकगम्पधन ॥ गमगिनिजालंकगरुदनि
॥ विरु विगरु निबुदरा व ॥ साचनमानमस्तु ॥ ७ ॥
जयमृग्य ॥ यदक्रमरवकय ॥ विष्णु विनिश्चिनमि
न ॥ यदयमयमागमन ॥ यनमयदकायिन ॥ पीना
कवा ॥ लखानमानमस्तु ॥ १० ॥ जयरुगाधियरु
तिविरु विग ॥ लुजगजाजरुखल ॥ रुवरावहीम
प्रियनाधी ॥ शिगुलपुवकनाधनमानमस्तु ॥ ११ ॥
॥ तिदसग्रीवविनविगला ॥ समाधि ॥ ॥ गुरु ॥

ॐ नमः सूर्याय ॥ वशिष्ठ उवाच ॥ सुवस्तु गगन ॥ भवतु
धर्ममनिसंगत ॥ जाजनामसरुस्रस्रस्र ॥ सरुस्रस्र
दिवाकर्त ॥ १ ॥ विद्यमानं गगनं दृष्ट्वा ॥ सूर्यं कृष्णमजग
दा शस्त्रं नदं नदत्वा ॥ यूनवचनमववीत् ॥ २ ॥ सूर्य
उवाच ॥ भवतु भवमहावाहा ॥ भृशजाम्बवगी संगत ॥
जलनामसरुस्रस्र ॥ य ० स्वर्गवर्गभूर ॥ ३ ॥ जानिनामा
निगुक्रानि ॥ यद्विज्ञाति भुरा निचहागा निगकीरि यिष्ठा

मि ॥ भृशत्वावत्मावधनिव ॥ ४ ॥ विकर्तना विचस्वांश्च नास्त
॥ भृशरास्त्रयानवि ॥ लाक एकासनश्रीमां ॥ लाक चक्रुश्रु
भवत् ॥ ५ ॥ लाकसाक्षी गिलाकश ॥ कर्तुं रुर्गोत मिश्रला
गयनसायन ॥ भवत् ॥ भुचि ॥ सया भवदाहन ॥ ६ ॥ गलसि
दृष्टावत्माच ॥ सर्वदेवनमस्तु ॥ न क विंशत्क ० थय
स ० ० ० सदा मम ॥ १ ॥ ज्ञायुना ग्यक ० भवत् ॥ धनवृद्धिय
भस्केन ॥ सवनाज ० निरव्याग ॥ सिधुलाक वृविश्र

न॥८॥यजुगनमहूवाहो॥सन्ध्यामन्त्रद्वय॥स्तोत्रि
याद्युगतास्तु॥सर्वयार्थयुग्मय॥६॥कायिकवावि
कचव॥मानसयच्च॥७॥कृग॥उकजथा नगसव॥य
म॥३॥तिममाग॥१०॥उषजयहाम॥सं॥वा
सनमवच॥वलिमन्त्र॥४॥मन्त्र॥हाममन्त्रसुथे
नच॥११॥जुनपुनानस्वानवा॥युगियातपुणीकि॥

आयुजिगीयमहामनु ॥ सर्वयायेरुनः ॥ १२ ॥ जवम्
 स्त्रागुरगवान् ॥ रास्त्राजगदीध्वनः ॥ जामक्यकुक्कु
 न्नय ॥ गुरुवान्तनधापत ॥ १३ ॥ भर्वायिकुर्वनाजन
 सुखासकाश्चवारुनः ॥ प्रतातिनिर्जः ॥ श्रीमांस्त
 म्हादिग्मद्विमूकवान् ॥ १४ ॥ इतिश्रीभर्वायिका
 लोभाजमयनयलो ॥ श्रीसूर्यावकादिनिर्गतः ॥ स
 वन्तः ॥ समाप्तः ॥ शुद्धमस्तु सर्वदा ॥ २०५ ॥



ॐ नमः ॥ विष्णवे ॥ मरिचयानक दीपक यन्त्र
मयिदुषाययसदृशी सुनिर्दिष्टादीनामयित्तदवस
द्वास्तयिगिनः ॥ ज्येष्ठवाचः ॥ सर्वः ॥ स्वमति य चित्त
मावधिगलतः ॥ ममाद्यवस्तु हननियवाद् ॥
यनिकनः ॥ १ ॥ ज्येष्ठः ॥ यन्त्रनः ॥ वचमहिमा
वाश्चनसया ॥ नगः ॥ द्यावृष्यायं वकिगमयिध

रुष्टिनिदियासकस्यस्तुगद्यः ॥ कनिविधुष्ट
॥ कस्यविषयः ॥ यद्वत्वाचीनयनगिनमनः ॥ क
स्यनवचः ॥ २ ॥ मधुस्तीगावाचः ॥ यन्त्रमममृगं
निर्मितवत् ॥ सुवद्वक्तृन्किम्बागयिसूचगु
नाविस्मययदं ॥ ममत्वेगाम्बाणी गुणकथनव
ल्लनरावत् ॥ यन्त्रामीत्यर्थस्मिन् यन्त्रमथन

वृद्धिर्ब्रह्मसिगा ॥ ३ ॥ सर्वं ध्वर्यं यत्कुरु गद्गदयनका
युलयकः रुयीवस्तु व्यस्तं निसृष्टं गुलरिनासृग
नृष्टं ॥ जुरवा नामस्मिन् वस्तु नदनमूलीयामनम
ली ॥ विरुक्तं चाकां विधिदधनं ॥ कज्जुधिय
॥ ४ ॥ किमीरु ॥ किंकाय ॥ सरवल किमयायसिखव
नी किमावावावागस्तु ॥ किमयादानं ॥ किच

जुगर्कः ध्वर्यं लयनवसनं स्मरुतधिय ॥ कृगर्का
यकां धिस्त्रवचयतिमाहायजगग ॥ ५ ॥ जुज
न्मानालाका ॥ किमवयववभायिजगगा ॥ मधिष्ठा
गर्वाकिंरवविधिननादस्यरावति ॥ जुज्ज ॥ मवाक
योद्गवनजननक ॥ यनिकर्च ॥ यगामन्दाहृयि
यमनवचसं ॥ ६ ॥ ययीसांख्ययाग

४ यः पुनरि मर्गं वैश्व मिमि । युरि नृपुत्रान्
यनमिदमद ४ यथामिगिच । उची नर्वि विग्राह
इकटिलनानायथशब्दां । नृणां भका गम्यस्त्वमसि
ययसामर्णं वरुव ॥ १ ॥ मलाक ४ खडाङ्ग यनशु
नजिनरुस्मरुनिन ४ कयालं चगी यरु ववचद
नंगाय कचन १ सूनास्ताना मृद्धि दध गिगुरवडू

युलरिगाः नहि स्वात्मा चामं विषयमृगरुक्का
मुमयगि ॥ ७ ॥ कुर्वक भित्सर्वः सकलमयन
स्वकुर्वमिदं यवाः १ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
विषयः ॥ समस्तयानस्मिन् यन्मथनं गविस्मि
गव्व सुवन्तिजिऊ मित्रान्तरवत्तननूधृक्षाम्
खचगा ॥ ८ ॥ गवैश्वर्यं यत्ताद्यद्वयचिविनिधि

रुविनधः यचि कु उं या गा व न ल म नि ल क्क ध
वेषु व १ ग ग र कि ष्ट ष्ट र न उ च ग्ट ण ह्यो मि नि
शयत् स्वयन क्क गा र्यो ग व कि म न्न वृ रि न र
ल गि ॥ १० ॥ ज्य त्ना दा सा द्य गिरु व न म व चि व
गि क र्च ६ १ म स्या य द्वा द्वा न र ग व ग क षु य न
व १ म ग ॥ ११ ॥ य न्न (१) गी न चि ग व न ल १ म

चरु व ल १ रि ना या ल्वा रु क रि य व रु न वि स्रु कि
ग मि द ॥ ११ ॥ ज्म य त्व ल्म वा स म धि ग र सा व रु
ऊ व न व ल लै ला स यि त्व द धि व स गो वि क म य
ग १ ज्म ल स्या या ग ल य ल स र्व ल ग र्दु १ गि व
सि य गि द्वा ल य सि द्धु व म य चि ग म १ गिर व
ल ॥ १२ ॥ य द्धि म्म ग म्मा व न द य न मा उ व न यि स

गी मधश्चक्रवाणः यनिजनविधेयशितुवन
नरुजिर्गमिन्तुवनिवसितनित्वजनथा
नकस्यायुनर्येर्वतिष्ठिनसस्त्रयवनति ॥ १३
ज्जकाष्ठुवक्राष्ठुद्वयचक्रितद्वसूचकृया वि
रधयस्यासीद्यलिनयनविषसंदनवतः ॥ स
कल्लावः कल्लगवनकचूगनधियमरु

विकानाविस्तथाशुवनरुपररुचसनिन ॥ १४
जसिष्ठार्थनवक्कचिद्विसद्वसूचनन निवर्त
कनिर्यजगतिर्जयिनायस्यविगिरवा ॥ सय
श्चनीगलामिगनसूचसाधचनमरुत्सवः ॥ स
रुवात्मानदिवगिष्यथः यनिरवः ॥ १५ ॥ स
हीयादाद्यागा दुजतिसरुसासंशययदं य

दं विष्णुगाम्यरुजयविद्यवृक्षगुरुगल१॥म॥
दूधोर्दोर्द्विपास्यनिरुगजटा॥गाडिगगटा॥उ॥
गडकायेत्वनटसिनन्वामेवविरुगा॥१॥
वियद्यापीतानागणगुलिगरु॥१॥
यवालावावाय॥यृषगलघृष्ट॥गिनसिग॥
जगद्दीयाकावजलधिवलयननकृगमि॥य

ननेवान्नयधृगमहिमदिष्टगवयू॥१॥
॥काणीयनागधृगिच॥गलाधननथ॥
थ॥मचलाकोवधचनगयालि॥गव॥
धकासका॥य॥गिच॥गला॥माउमनविधि॥
धये॥काउ॥नानरवल्लयचगला॥यसुधिय॥
१॥रुचिस्तारुमुकमलवलिमाधाययद॥

या र्यदका नगस्मिनि जम्बदरु वन्नय कमल
गगारु रुडक यचिल निमसो चक्र वयुषा
उयाल न काये शियु न रु वजा मरि जगगी ॥
२॥ कु गोसूय जाग्रु मसिरु लया गकु ठु मगा
क क मयु धरु ल गियु रया ना धन मृग ज
गर्वा संपुत्र कु ठु वरु ल दान यु गिरु व ॥ ३॥



गोशुद्धी वधादर यचिकन कर्मसूजन ॥ २०॥
क्रियाद का द क कु युपति वधी शास्त्र
नरु ना मृषी लामा दि ई शा वल दसदस्या सूत्र
गल ॥ कु युधं वल्लर कु युव रु ल दान वयस
निना ध्रुव करु शुद्धा विधु चम रि वा नाय रि
मखा ॥ २१॥ सदा वरु ल य कु कु शु निसम धि ग

म्यः सरुएवान् घृणमय्त्स्नल्यस्वजनविष
यस्तरुगुलिर्गः दिङ् कृगन्यादोयिगनमयवा
धात्वयिविशः मन्त्रश्च त्वं त्यक्त्वा युमधयददीत्या
यदचला ॥ २२ ॥ प्रजानाथं नाथप्रसरमरिक्कस्वी
इरिगनः गङ्गाधरिहृन्निनमयिषु मृष्टास्यव
पूषा धनः यालयार्गं दिवमयिसयगाकृ

गमम् १ उसंगं गद्यायिर्यङ्गिनिनमृगव्याध
वरस ॥ २३ ॥ स्वलावण्याऽऽस्ताधृगधनूषमज्ञा
यएलवगः पुनः पुष्टं हृष्टायुनमथनयूष्यायू
धमयि यदि कुलं देवीयमनिनगदलाहृद्यद
ना दवे गित्वामवावगवनदमृष्टायुवगय ॥
२४ ॥ मन्त्रनथाः कीञ्च १ मन्त्रनयिज्ञवाः

सरुचना शि गारुस्मालयः सुगयि नृ कनादी
यनिकचः जमङ्गल्यं नीलं गवरावतु नाभेवम
खिलं गथायि स्मर्तुं वनदय चमम्भङ्गलमः
सि ॥ १७ ॥ मनः पुयकिरुसविधमविधायानः
मङ्गलः यदुष्टादामाणः पुमदसलिलात्सङ्गि
नदमः ॥ यदालाकाः ५ झादं ऊदं ५ वनिमङ्गाः ५ म

गमयः दधत्यक्तुत्वं किमपियमिनस्तुकि
लरावान् ॥ १६ ॥ त्वमर्कत्वं सामह्वमसिपवनः
त्वं दृग्वरु त्वमायत्वं द्यामत्वमध्वनि नात्मात्व
मिगिच यनिष्ठिनाभवं त्वयिय विना गाविरुतु
गिच न विद्मस्तुत्वं वयमिरुतुयत्वं नरव
सि ॥ १७ ॥ उयीनिम्रावृलीति सुवनमथगीनयि

सुना न काना धेव (र्के) कि रि च रि द ध ली र्के विः
कु रि ॥ २० ॥ वी य न क धा म ध नि रि च व र द्वा न म लः
रिः ॥ स म र्क व र्क ली ण च ल द ग्ग ल्हा त्या मि गि य द
॥ २१ ॥ रु व ॥ स र्वी चू ड ॥ य णु य गि च (धा ग) ॥ स
रु म ला सु धा री म ल्हा ना वि रि य द रि धा ना ॥ २२
क मि द ॥ ज म्भि न् यु र्क य वि च न रि द व र्क

गि च यि ॥ प्रि या या स्म धा म्भ पु लि हि ग न म स्था ॥ मि
रु व र्क ॥ २३ ॥ न मा न दि द्वा य प्रि य द व द वि द्वा य
च न मा न म ॥ का वि द्वा य स्म न रु च म दि द्वा य च
न म ॥ न मा व र्हि द्वा य रि न य न य वि द्वा य च न
मा न म ॥ स र्व स्म ग र्क दि द मि गि स र्व यि च न म ॥ २४
० ॥ व द्वा ल च ज स वि (धा त्या र्के) रु वा य न मा न म ॥

प्रवल गमसगत्सिला परु नायनमानमः। जन
सुखदगसत्वायकोमृतायनमानमः। यमरुसि
यदु निरुमुगुल्यजिवायनमानमः॥३१॥ कृष्ण
यजिन गिधगः॥ कृष्णवध्यकचदं कचगवमुल
सीमालीचिनीगव्यवृद्धिः॥ ६० गिचकिगममंदी
कुरुमंराकिनाधः॥ दचदचचलयासुवाकयः

ध्यायलानः॥३२॥ मनोवामंदिचवाचजगति
निगुलागकचवालिगारुध्यायनखलनरुमः
नवासकलमलरुनसर्वकामकदागा। गस्यायु
चेदुमोलिः॥ सूचयति विविनाहकिगकुर्यय
थै। चालाकं वाचिगारुय० गिचय ६० दंयुथ
दकयवर्ध॥३३॥ सूचयति विविनाहकिगकुर्यय

कुरुते य० नियदिमन्त्राय ॥ लिनीन्य
गा ॥ वृजतिविषममीयं किन्नरसूयमानं सु
वनमिदमभाष्यदत्तपुनीतं ॥ ३४ ॥ कुरु
मरुगाननामासर्वगन्धर्वराजः ॥ विष्णुगानध
नमोलकवदवस्यदासः ॥ सगुननिजमहिम्ना
गुह्यवास्यानाथात् ॥ सुवनमिदमकार्षादि

वृद्धिर्वामहिम्नः ॥ धीयुष्यदत्तमुखयकजनिः
मृगनः सुगुनकिलिषरुचलरुचः ॥ प्रियनः
कुरुगुणिनयतिगुनगुरुस्मिन्तः संप्रियग
रुचगिरुचयतिर्महान् ॥ ३५ ॥ वसुनसुनम
नीलेनर्विगन्धुमोलः ॥ युधिगुणमहिम्ना
निर्मुक्तस्यावयत् ॥ सकलगुणवचिष्टः ॥ यद्य

ककारिध्वानाः पुचिचममलसुर्हिस्मायुभग
 चकान ॥ ३० ॥ अस्तिगिनिचिसमः स्यात्कङ्कलसि
 ध्वयात् सुचगचवचभखात्खनीययमूर्ध्वी
 यदि लिखगिगृहीत्वासाचकासर्वकालं गदः
 यिगवचुभनामीभयाचनयागि ॥ ३१ ॥ मः
 रुभनायचादवा महिम्नानायचसुगिभञ्ज

धावा नायनामला नासिग त्वहु भा यनं ॥ ३६
॥ भिवरुकिः भिवरुकिः भिवरुकि रवरा
व सदाख्यात्सदाख्यात्सदाख्यात्सदामम
॥ ४० ॥ भिवभिवनिभिवनिभिव निवा रुचः
रुचनिरुचनिरुच निवा रावरुच नि रुच
निरुच निवा राजमनः भिवमवनि नक च

॥ ४१ ॥ दी का कानं गयसीर्थं ॥ हामं यागमदिः
 काक्रिया ॥ महिम्नः ॥ या ० मा ॥ ० ॥ क ली ना हं नि
 धा ० ॥ ४२ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 हि नः ॥ सारं समाकं ॥ ॐ ॥ ॥ नमः शिवाय ॥
 ॐ जयद्रव जया जय ॥ जय हाङ्क नमः स्वग ॥ जः
 य सर्वसूनाथ ॥ जय सर्वसूनाथिग ॥ जयस



वैकुण्ठगीग ॥ जय सर्ववचक्षुद ॥ जय निरुपनिः
 नाथाच ॥ जय विश्वंराजाय ॥ जय विष्णवे कः
 वन्दे ॥ जय नागानुख्यन ॥ जय गोपीय
 ग ॥ जय चन्द्राङ्क ॥ जय काश्यपः
 स का ॥ जय नन्दगुणाय ॥ जय चन्द्रविन्द
 या ॥ जय निरुपनिच ॥ जय नाथकृपा

ॐ शिवाय नमः । जयशंकराय नमः । जयशंकराय नमः ।
 सा नमः सा गंगा नमः । यसीदमममम
 रागः संसा नमः स्य विद्यते ॥ सर्वयाय नमः
 नमः नमः नमः नमः ॥ मलाका विदुम
 नमः मलायाय नमः ॥ मलाका विनि
 नमः मलायाय नमः ॥ मलाका विनि

४) सौम्य

गस्यः दृष्टमा नस्यः शङ्कः नः ॥ गुरुः ॥ युयिश्चमा
नस्यः यसीदममः शङ्कः नः ॥ ६६ ॥ गिरुः शङ्कः नः
रवीः उः दानिः उः मां नः नामः शङ्कः नः स्यः स्तार्यः समाः यः
॥ ६७ ॥ ॥ ॥ नमः रंगः नः कः वासुदः वायः ॥ नावायनः
नमः हृदयः नः वः वनः नः रुमः देविः सलः श्वः गिः वः नः
नकाः जयः सुविलयः ॥ धनः नासुमः यः वः ॥ इति सं
जयः जहः नः